अर्थशास्त्र

(समष्टि अर्थशास्त्र)

अध्याय-4: आय और रोजगार के निर्धारण

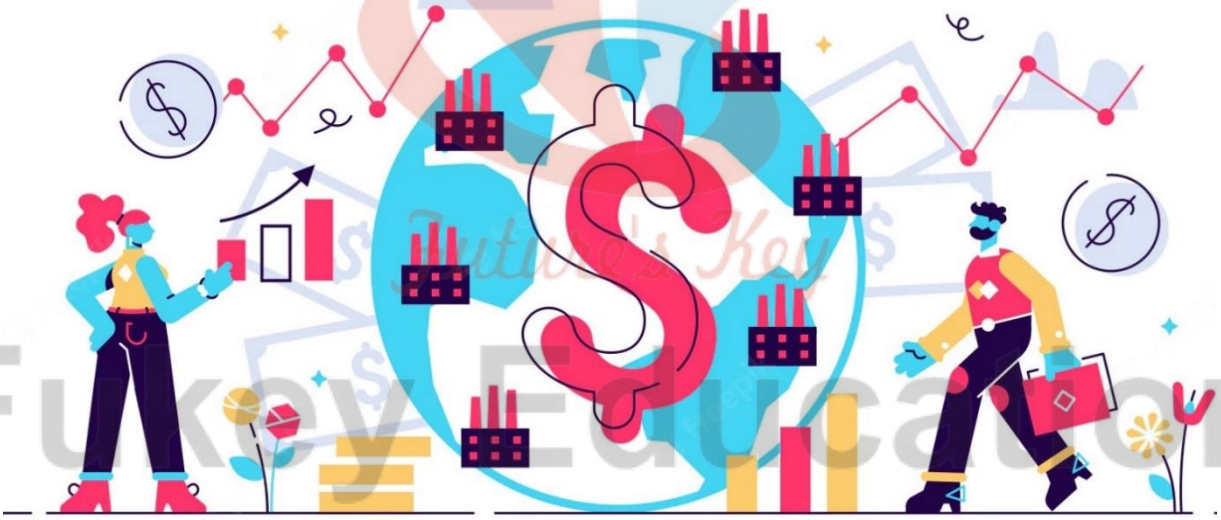

Fukey Education

समग्र माँग

एक अर्थव्यवस्था के समस्त क्षेत्रों द्वारा एक दिए हुए आय स्तर पर एवं एक निश्चित समयावधि में समस्त अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के नियोजित क्रय के कुल मूल्य को समग्र मांग कहते हैं। एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं व सेवाओं की कुल मांग को समग्र मांग (AD) कहते हैं इसे कुल व्यय के रूप में मापा जाता है।

समग्र मांग के मुख्य घटक निम्नलिखित हैं

- उपभोग व्यय (c)
- निवेश व्यय (I)
- सरकारी व्यय (G)
- शुद्ध निर्यात (X – M)
- इस प्रकार, AD = C + I + G + (X – M)
- दो क्षेत्र वाली अर्थव्यवस्था में AD = C + I

समग्र पूर्ति

एक अर्थव्यवस्था की सभी उत्पादक इकाईयों द्वारा एक निश्चित समयावधि में सभी अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के नियोजित उत्पादन के कुल मूल्य को समग्र पूर्ति कहते हैं। समग्र पूर्ति के मौद्रिक मूल्य को ही राष्ट्रीय आय कहते हैं। अर्थात् राष्ट्रीय आय सदैव समग्र पूर्ति के समान होती है।

AD = C + S

समग्र पूर्ति देश के राष्ट्रीय आय को प्रदर्शित करती है।

AS = Y (राष्ट्रीय आय)

उपभोग फलन

उपभोग फलन आय (Y) और उपभोग (C) के बीच फलनात्मक सम्बन्ध को दर्शाता है।

c = f (Y)

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

यहाँ C = उपभोग

Y = आय

f = फलनात्मक सम्बन्ध

उपभोग फलन की समीकरण

C = C_ + MPC . Y

स्वायत्त उपभोग (C_)

आय के शून्य स्तर पर जो उपभोग होता है उसे स्वायत्त उपभोग कहते हैं। जो आय में परिवर्तन होने पर भी परिवर्तित नहीं होता है, अर्थात् यह आय बेलोचदार होता है।

प्रत्याशित उपभोग

राष्ट्रीय आय के मिश्रित स्तर पर नियोजित निवेश को कहते है।

प्रेरित उपभोग

उस उपभोग स्तर से है जो प्रत्यक्ष रूप से आय पर निर्भर करता है।

उपभोग प्रवृति

उपभोग प्रवृत्ति दो प्रकार की होती है

- औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC)
- सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC)

औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC)

औसत प्रवृत्ति को कुल उपभोग तथा कुल आय के बीच अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है।

APC = कुल उपभोग (C) / कुल आय (Y)

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

APC के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण बिन्दु

- APC इकाई से अधिक रहता है जब तक उपभोग राष्ट्रीय आय से अधिक होता है। समविच्छेद बिन्दु से पहले, APC > 1 .
- APC = 1 समविच्छेद बिन्दु पर यह इकाई के बराबर होता है जब उपभोग और आय बराबर होता है। C = Y
- आय बढ़ने के कारण APC लगातार घटती है।
- APC कभी भी शून्य नहीं हो सकती, क्योंकि आय के शून्य स्तर पर भी स्वायत्त उपभोग होता है।

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) :-

उपभोग में परिवर्तन तथा आय में परिवर्तन के अनुपात को, सीमांत उपभोग प्रवृत्ति कहते हैं।

$$MPC = \frac{\text{उपभोग में परिवर्तन}}{\text{आय में परिवर्तन}} = \frac{\Delta C}{\Delta Y}$$

MPC का मान शून्य तथा एक के बीच में रहता है। लेकिन यदि सम्पूर्ण अतिरिक्त आय उपभोग हो जाती है तब ΔC = ΔY, अत : MPC = 1 . इसी प्रकार यदि सम्पूर्ण अतिरिक्त आय की बचत कर ली जाती है तो ΔC = 0 . अत : MPC = 0 .

बचत फलन

- बचत और आय के फलनात्मक सम्बन्ध को दर्शाता है।
- s = f (Y)

  यहाँ s = बचत

  Y = आय

  f = फलनात्मक सम्बन्ध

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

बचत फलन का समीकरण

- $s = -S_0 + sY$.
- जहाँ s = MPS

बचत प्रवृत्ति दो प्रकार की होती है : – APS तथा MPS

औसत बचत प्रवृत्ति (APS)

कुल बचत तथा कुल आय के बीच अनुपात को APS कहते हैं।

$$APS = \frac{\text{बचत}}{\text{आय}} = \frac{S}{Y}$$

औसत बचत प्रवृत्ति APS की विशेषताएँ

- APS कभी भी इकाई या इकाई से अधिक नहीं हो सकती क्योंकि कभी भी बचत आय के बराबर तथा आय से अधिक नहीं हो सकती।
- APS शून्य हो सकती है : समविच्छेद बिन्दु पर जब C = Y है तब S = 0 .
- APS ऋणात्मक या इकाई से कम हो सकता है। समविच्छेद बिन्दु से नीचे स्तर पर APS ऋणात्मक होती है। क्योंकि अर्थव्यवस्था में अबचत (Dissavings) होती है तथा C > Y .
- APS आय के बढ़ने के साथ बढ़ती हैं।

सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS)

आय में परिवर्तन के फलस्वरूप बचत में परिवर्तन के अनुपात को सीमांत बचत प्रवृत्ति कहते हैं।

$$MPS = \frac{\text{बचत में परिवर्तन}}{\text{आय में परिवर्तन}} = \frac{\Delta S}{\Delta Y}$$

MPS का मान शून्य तथा इकाई (एक) के बीच में रहता है। लेकिन यदि

- यदि सम्पूर्ण अतिरिक्त आय की बचत की ली जाती है, तब AS = AY, अत : MPS = 1 .
- यदि सम्पूर्ण अतिरिक्त आय, उपभोग कर ली जाती है, तब AS = 0, अतः MPS = 0 .

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC) तथा औसत प्रवृत्ति (APS) में सम्बन्ध

सदैव APC + APS = 1 यह सदैव ऐसा ही होता है, क्योंकि आय को या तो उपभोग किया जाता है या फिर आय की बचत की जाती है।

प्रमाण: Y = C + S

दोनों पक्षों का Y से भाग देने पर

1 = APC + APS

अथवा

APC = 1 – APS या APS = 1 – APC | इस प्रकार APC तथा APS का योग हमेशा इकाई के बराबर होता है।

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) तथा सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS) में सम्बन्ध

- सदैव MPC + MPS = 1 ; MPC हमेशा सकारात्मक होती है तथा 1 से कम होती है। इसलिए MPS भी सकारात्मक तथा 1 से कम होनी चाहिए।

  प्रमाण ΔY = ΔC + ΔS .

- दोनों पक्षों को ΔY से भाग करने पर

  1 = MPC + MPS अथवा

  MPC = 1 – MPS अथवा

  MPC = 1 – MPC

पूँजी निर्माण / निवेश

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

- एक अर्थव्यवस्था में एक वित्तीय वर्ष में पूँजीगत वस्तुओं के स्टॉक में वृद्धि को पूँजी निर्माण / निवेश कहते हैं।
- इसके दो प्रकार होते है :-
    1. प्रेरित निवेश
    2. स्वतंत्र निवेश

प्रेरित निवेश

प्रेरित निवेश वह निवेश है जो लाभ कमाने की भावना से प्रेरित होकर किया जाता है। प्रेरित निवेश का आय से सीधा सम्बन्ध होता है।

स्वतंत्र (स्वायत्त) निवेश

स्वायत्त निवेश वह निवेश है जो आय के स्तर में परिवर्तन से प्रभावित नहीं होता अर्थात् आय निरपेक्ष होता है।

नियोजित बचत

एक अर्थव्यवस्था के सभी गृहस्थ (बचतकर्ता) एक निश्चित समय अवधि में आय के विभिन्न स्तरों पर जितनी बचत करने की योजना बनाते हैं, नियोजित बचत कहलाती है।

नियोजित निवेश

एक अर्थव्यवस्था के सभी निवेशकर्ता आय के विभिन्न स्तरों पर जितना निवेश करने की योजना बनाते हैं, नियोजित निवेश कहलाती है।

वास्तविक बचत

अर्थव्यवस्था में दी गई अवधि के अंत में आय में से उपभोग व्यय घटाने के बाद, जो कुछ वास्तव में शेष बचता है, उसे वास्तविक बचत कहते हैं।

वास्तविक निवेश

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

किसी अर्थव्यवस्था में एक वित्तीय वर्ष में किए गए कुल निवेश को वास्तविक निवेश कहा जाता है। इसका आंकलन अवधि के समाप्ति वास्तविक पर किया जाती है।

आय का संतुलन स्तर

आय का वह स्तर है जहाँ समग्र माँग, उत्पादन के स्तर (समग्र पूर्ति) के बराबर होती है अत : AD = AS या s = I .

पूर्ण रोजगार

इससे अभिप्राय अर्थव्यवस्था की ऐसी स्थिति से है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति जो योग्य है तथा प्रचलित मौद्रिक मजदूरी की दर पर काम करने को तैयार है, को रोजगार मिल जाता है।

ऐच्छिक बेरोजगारी

ऐच्छिक बेरोजगारी से अभिप्रायः उस स्थिति से है, जिसमें बाजार में प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य उपलब्ध होने के बावजूद योग्य व्यक्ति कार्य करने को तैयार नहीं है।

अनैच्छिक बेरोजगारी

अर्थव्यवस्था की ऐसी स्थिति है जहाँ कार्य करने के इच्छुक व योग्य व्यक्ति प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य करने के लिए इच्छुक है लेकिन उन्हें कार्य नहीं मिलता।

निवेश गुणक

- निवेश में परिवर्तन के फलस्वरूप आय में परिवर्तन के अनुपात को निवेश गुणक कहते हैं।

$$K = \frac{\Delta Y}{\Delta I} \text{ या गुणक } = \frac{\text{आय में परिवर्तन}}{\text{निवेश में परितर्वन}} \text{ अथवा } K = \frac{1}{1 - MPC}$$

अथवा $K = \frac{1}{MPS}$. इसका अधिकतम मान अनंत तथा न्यूनतम मान एक होता है।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

- जब समग्र मांग (AD), पूर्ण रोजगार स्तर पर समग्र पूर्ति (AS) से अधिक हो जाए तो उसे अत्यधिक मांग कहते हैं।
- जब समग्र मांग (AD), पूर्ण रोजगार स्तर पर समग्र पूर्ति (AS) से कम होती है, उसे अभावी मांग कहते हैं।

स्फीतिक अंतराल

वास्तविक समग्र मांग और पूर्ण रोजगार संतुलन को बनाए रखने के लिए आवश्यक समग्र मांग के बीच का अंतर होता है। यह समग्र मांग के आधिक्य का माप है। यह अर्थव्यवस्था में स्फीतिकारी प्रभाव उत्पन्न करता है।

अवस्फीति अंतराल

वास्तविक समग्र मांग और पूर्ण रोजगार संतुलन को बनाए रखने के आवश्यक समग्र मांग के बीच का अंतर होता है। यह समग्र मांग में कमी का माप है। यह अर्थव्यवस्था अवस्फीति (मंदी) उत्पन्न करता है।

Fukey Education

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 69)

प्रश्न 1 सीमांत उपभोग प्रवृत्ति किसे कहते हैं? यह किस प्रकार सीमांत बचत प्रवृत्ति से संबंधित है?

उत्तर- सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC)- आय के परिवर्तन के कारण उपभोग में परिवर्तन के अनुपात को सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) कहते हैं। यह बढ़ी हुई आय का वह भाग है जो उपभोग पर खर्च किया जाता है उपभोग में परिवर्तन (ΔC) को आय में परिवर्तन (Δy) से भाग करके MPC को ज्ञात किया जाता है। सूत्र के रूप में-

$$\text{MPS} = \frac{\Delta S}{\Delta y}$$

यहाँ, ΔC= उपभोग में परिवर्तन

Δy= आय में परिवर्तन।

सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS)- आय में परिवर्तन के कारण बचत में परिवर्तन के अनुपात को सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS) कहते हैं। यह उस बढ़ी हुई आय का वह भाग या अनुपात है जो बढ़ी हुई आय से बचाई गई है। बचत में परिवर्तन (ΔS) को आय में परिवर्तन (Δy) से भाग करके MPS को ज्ञात किया जा सकता है।

सूत्र के रूप में-

$$\text{MPS} = \frac{\Delta S}{\Delta y}$$

यहाँ, ΔS= बचत में परिवर्तन

Δy= आय में परिवर्तन।

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति और सीमांत बचत प्रवृत्ति का योग (1) इकाई के बराबर होता है। इस प्रकार, सीमांत उपभोग प्रवृत्ति + सीमांत बचत प्रवृत्ति = 1 अर्थात्

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

MPC + MPS = 1

प्रश्न 2 प्रत्याशित निवेश और यथार्थ निवेश में क्या अंतर हैं?

उत्तर- प्रत्याशित अथवा इच्छित निवेश वह निवेश हैं जो निवेशकर्ता किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आय तथा रोजगार के विभिन्न स्तरों पर करने की इच्छा रखते हैं। यथार्थ अथवा वास्तविक निवेश वह निवेश हैं, जो निवेशकर्ता किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आय तथा रोजगार के विभिन्न स्तरों पर वास्तव में करते हैं।

उदाहरण- मान लीजिए कि एक उत्पादक वर्ष के अंत तक अपने भंडार में 200 ₹ के मूल्य की वस्तु जोड़ने की योजना बनाता हैं। अतः उस वर्ष उसका प्रत्याशित निवेश 200 ₹ है। किंतु बाज़ार में उसकी वस्तुओं की माँग में अप्रत्याशित वृद्धि होने के कारण उसकी विक्रय में उस परिमाण से अधिक वृद्धि होती हैं, जितना कि उसने बेचने की योजना बनाई थी। इस अतिरिक्त माँग की पूर्ति के लिए उसे अपने भंडार से 60 ₹ के मूल्य की वस्तु बेचनी पड़ती है। अतः वर्ष के अंत में उसकी माल-सूची में केवल 200 - 60 ₹ = 140 ₹ की वृद्धि होती है। इस प्रकार, उसका प्रत्याशित निवेश 200 ₹ है, जबकि उसका यथार्थ निवेश केवल 140 ₹ हैं।

प्रश्न 3 'किसी देश में पैरामेट्रिक शिफ्ट' से आप क्या समझते हैं? रेखा में किस प्रकार शिफ्ट होता है जब इसकी-

I. ढाल घटती है।
II. इसके अन्त: खण्ड में वृद्धि होती है?

उत्तर-

एक सरल रेखा का समीकरण b = ma + e के रूप में दर्शाया जिसमें a और b दो परिवर्त/ चर हैं। m > 0 को सरल रेखा की प्रवणता कहा जाता है और e > 0 उर्ध्वाधर अक्ष पर अन्त:खण्ड है। जब u में 1 इकाई से वृद्धि होती तो b के मूल्य में m इकाइयों से वृद्धि हो जाती है। इसे आलेख पर परिवर्तों का संचलन कहते हैं। परन्तु जब m या e में परिवर्तन होता है तो इसे आलेख का पैरामिट्रिक शिफ्ट कहते हैं, क्योंकि m और e को आलेख का पैरामीटर कहा जाता है। अन्य शब्दों में आलेख

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

की प्रवणता अथवा अन्त:खण्ड में परिवर्तन के कारण जो परिवर्तन होते हैं उसे आलेख का पैरामिट्रिक शिफ्ट कहते हैं। इसे उपभोग फलन द्वारा समझा जा सकता है।

$$C = \bar{C} + by$$

यदि y में परिवर्तन से C में परिवर्तन हों तो इसे आलेख पर परिवर्तनों का संकलन कहेंगे। परन्तु यदि C या है में परिवर्तन हों तो इसे आलेख का पेरामिट्रिक शिफ्ट कहा जायेगा। इसे दो भागों में बाँटा जा सकता है।

प्रवणता में परिवर्तन- प्रवणता में परिवर्तन होने पर वक्र इस प्रकार खिसकता है कि प्रवणता बढ़ने पर वक्र अधिक ढाल वाला हो जाता है और प्रवणता के घटने पर वक्र कम ढाल वाला हो जाता है।

अन्तखण्ड में परिवर्तन- अन्तखण्ड बढ़ने पर वक्र उतनी ही मात्रा से समान्तर रूप से (क्योंकि प्रवणता समान है) ऊपर की ओर खिसक जाता है और इसके विपरीत अन्त:खण्ड घटने पर उतनी ही मात्रा से समान्तर रूप से नीचे की ओर खिसक जाता है।

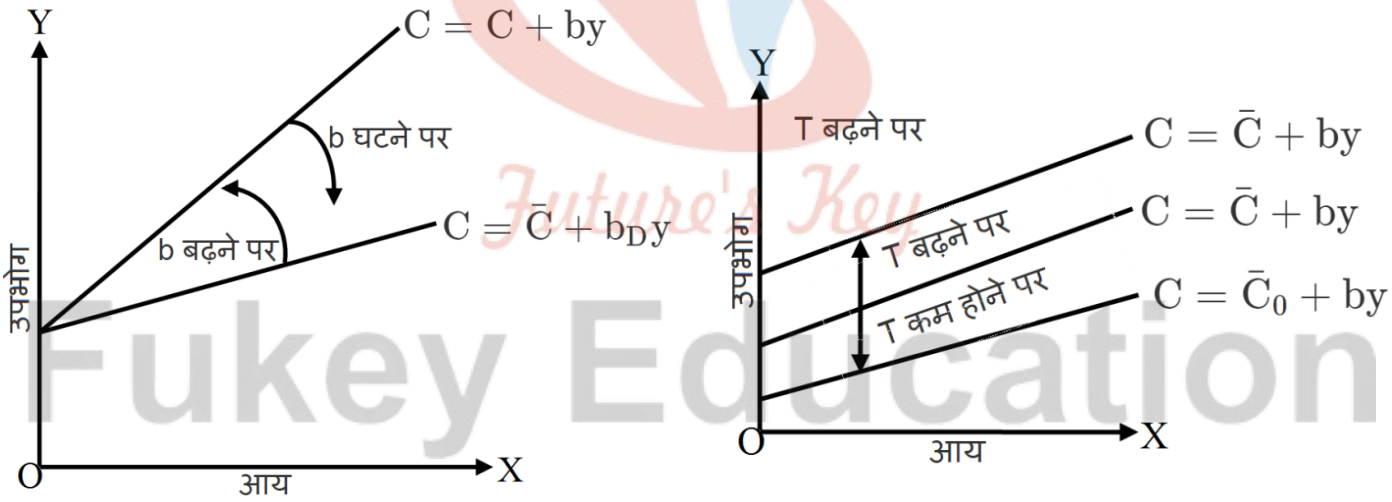

I. जब रेखा की ढाल घटती है तो रेखा पहले से कम ढाल वाली हो जाती है। उदाहरण के लिए यदि C = C + by में C = 100 + 0.84 था b घटकर 0.6 हो गया तो नया C = 100 + 0.6y हो जायेगा। यह वक्र पिछले C वक्र से कम ढाल वाला होगा। क्योंकि पहले आय 100 बढ़ने पर उपभोग 80 बढ़ रहा था, परन्तु अब आय 100 बढ़ने पर उपभोग 60 बढ़ेगा।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

II. जब रेखा के अन्त: खण्ड आय में वृद्धि होती है तो रेखा समान्तर रूप से ऊपर की ओर खिसक जाती है, क्योंकि दो समान्तर रेखाओं की प्रवणता समान होती है।

प्रश्न 4 'प्रभावी माँग' क्या है? जब अंतिम वस्तुओं की कीमत और ब्याज की दर दी हुई हो, तब आप स्वायत्त व्यय गुणक कैसे प्राप्त करेंगे?

उत्तर- प्रभावी माँग से अभिप्राय समस्त माँग के उस बिंदु से जहाँ यह सामूहिक पूर्ति के बराबर है। प्रभावी माँग अर्थव्यवस्था की माँग का यह स्तर है जो समस्त पूर्ति से पूर्णतया संतुष्ट होता है और इसलिए उत्पाद को द्वारा उत्पादन बढ़ाने या उपभोग घटाने की कोई प्रवृत्ति नहीं पाई जाती। अन्य शब्दों में, समग्र माँग का वह स्तर जो पूर्ण संतुलन उपलब्ध करता है, प्रभावी हैं माँग कहलाता है। वैकल्पिक रूप में संतुलन के बिंदु पर समग्र माँग को प्रभावी माँग कहते हैं, क्योंकि राष्ट्रीय आय के निर्धारण में यह प्रभावी होती है। कैसे? केन्स के अनुसार आय का साम्य स्तर उस बिंदु पर निर्धारित होता है जहाँ समग्र माँग, समग्र पूर्ति के बराबर होती है। जब अंतिम उत्पादन व आय: वस्तुओं की कीमत और ब्याज की दर दी गई हो, तो स्वायत्त व्यय गुणक की गणना निम्नलिखित प्रकार से की जाएगी।

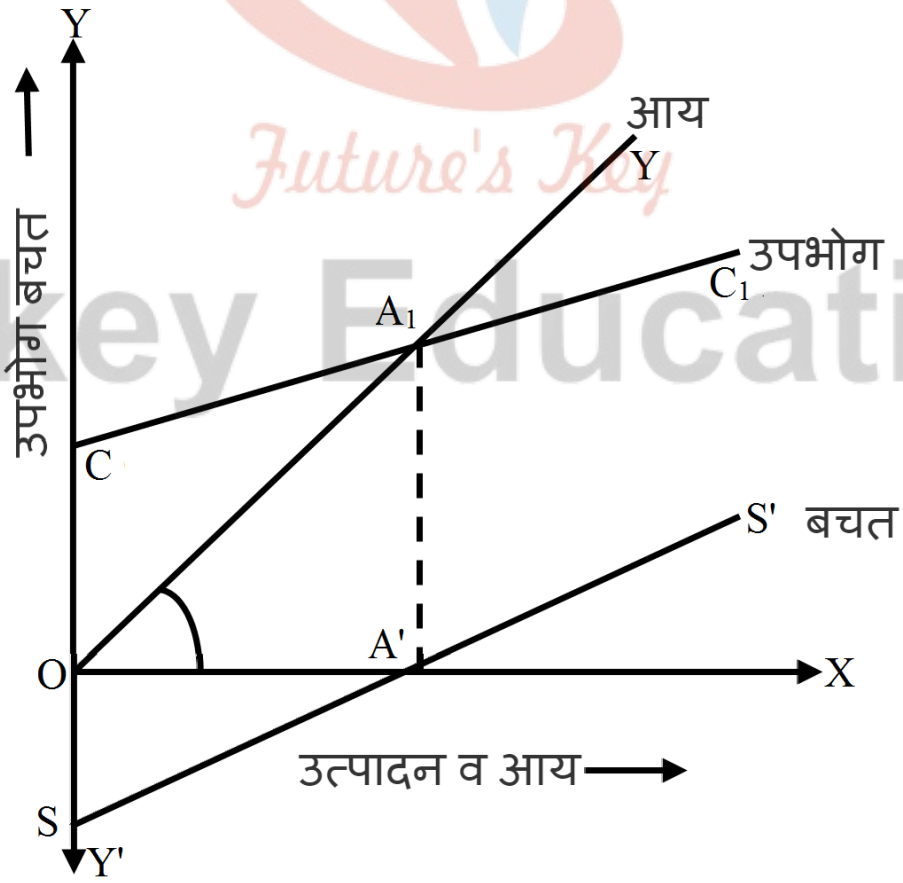

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

प्रश्न 5 जब स्वायत्त निवेश और उपभोग व्यय (A) 50 करोड़ ₹ हो और सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS)0.2 तथा आय (y) का स्तर 4,00,000 करोड़ ₹ हो तो प्रत्याशित समस्त माँग ज्ञात करें। यह भी बताएँ कि अर्थव्यवस्था संतुलन में है या नहीं (कारण भी बताएँ)।

उत्तर- आय का स्तर y = ₹ 4,00,000

स्वायत्त निवेश और उपभोग व्यय (A) = ₹ 50 करोड़

सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS) = 0.2 (∴ MPC = 1 – MPS)

सीमांत का उपभोग प्रवृत्ति = 1 - 0.2 = 0.8 (∴ C = MPC)

$$y = \bar{A} + C \times y$$

$$= 50 + 0.8 \times 4000$$

$$= ₹\ 3250 \text{ करोड़}$$

प्रत्याशित समस्त माँग = ₹ 3,250 करोड़

चूँकि वर्तमान आय का स्तर ₹ 4,000 करोड़ है जो प्रत्याशित समस्त माँग में ₹ 750 करोड़ अधिक है तो वह स्थिति अधिपूर्ति की होगी। इसलिए अर्थव्यवस्था संतुलन में नहीं है।

प्रश्न 6 मितव्ययिता के विरोधाभास की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - **मितव्ययिता के विरोधाभास का अर्थ-** मितव्ययिता के विरोधाभास से अभिप्राय यह है कि यदि अर्थव्यवस्था के सभी लोग अपनी आय से बचत के अनुपात को बढ़ा दें तो अर्थव्यवस्था में बचत के कुल मूल्य में वृद्धि नहीं होगी। इसका कारण यह है कि सीमांत बचत प्रवृत्ति के बढ़ने से सीमांत उपभोग प्रवृत्ति कम हो जाती है। और निवेश गुणक भी कम हो जाता है। फलस्वरूप आय में वृद्धि की दर भी कम हो जाती है। इस प्रकार बचत बढ़ाने से कुल बचत का बढ़ना आवश्यक नहीं है। नीचे दिए चित्र में स्पष्ट है कि सीमांत उपभोग प्रवृत्ति के कम SS से S1S1 पर खिसक गया। फलस्वरूप राष्ट्रीय आय भी घटकर Oy1 से Oy2 हो जाती है। जिससे बचत फिर कम हो जाएगी।

Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

इस प्रकार बचत में वृद्धि नहीं हो सकेगी। मितव्ययिता से हम आय बढ़ाना चाहते थे, परंतु यह विरोधाभास है कि इससे आय बढ़ने की बजाय कम हो गई।

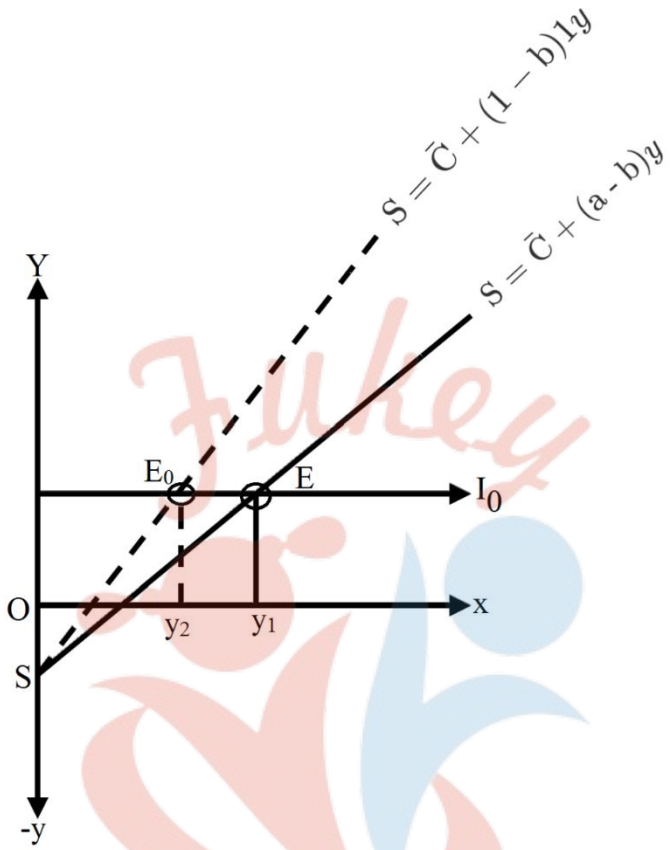

Fukey Education